औद्योगिक पशुपालन से पैदा होती महामारियां

सुनील

दुनिया में अचानक एक नया आतंक पैदा हो गया है। स्वाइन फ्लू या सुअर-ज्वर नामक एक नई संक्रामक बीमारी से पूरा विश्व आतंकित दिखाई दे रहा है। कई देशों में हाई-अलर्ट घोषित कर दिया गया है। हवाई अड्डों पर विशेष जांच व निगरानी की जा रही है।

यह बीमारी मेक्सिको से शुरू हुई थी, जहां 200 मौतें हो चुकी हैं। वहां के राष्ट्रपति ने पूरे देश में 5 दिन का आर्थिक बंद घोषित कर दिया था और लोगों को घरों में रहने की सलाह दी थी। स्कूल-कॉलेज, सिनेमाघर, नाइट क्लब बंद कर दिए गए हैं और फुटबाल मैच रद्द कर दिए गए हैं।

बगल में संयुक्त राज्य अमरीका में भी दहशत छाई है और राष्ट्रपति ओबामा ने स्थिति से निपटने के लिए संसद से 150 करोड डॉलर मांगे हैं। अमरीका के अलावा कनाडा, स्पेन, ब्रिटेन, जर्मनी, न्यूज़ीलैण्ड, इस्त्राइल, ऑस्ट्रिया, स्विट्ज़रलैण्ड, नेदरलैण्ड आदि में भी यह संक्रमण फैल चुका है।

बाकी दुनिया में भी खलबली मची है। मिस्र ने तो सावधानी बतौर 3 लाख सुअरों को मारने के आदेश जारी कर दिए हैं। भारत के सारे हवाई अड्डों पर बाहर से आने वाले यात्रियों की जांच की जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी है कि स्वाइन फ्लू एक महामारी बन सकता है।

पहले यह बीमारी सिर्फ सुअरों में होती थी, अब इंसानों में फैल रही है। एच1एन1 नामक नया वायरस बन गया है, जिसकी प्रतिरोधक शक्ति इंसानों के शरीर में नहीं है इसलिए मौतें हो रही हैं। इसका कोई टीका भी नहीं है और टैमीफ्लू नाम की एक ही दवाई है।

पिछले कुछ दशको में पालतू पशुओं के ज़रिए इंसानों में बीमारी फैलने का यह चौथा-पांचवा मामला है। इसके पहले एन्थ्रेक्स, सार्स, बर्ड फ्लू, मैड काऊ डिसीज़ आदि से अफरा-तफरी मची थी। इंसान इन बीमारियों से इतना आतंकित है कि इनकी ज़रा भी आशंका होने पर हज़ारों-लाखों मुर्गियों, गायों, सुअरों को मार दिया जाता है।

बर्ड फ्लू के डर से भारत में असम, प. बंगाल, महाराष्ट्र आदि में पिछले कुछ वर्षों में लाखों मुर्गियों को मौत के घाट उतारा गया है। मैड काऊ रोग के चक्कर में ब्रिटेन व अन्य देशों में लाखों गायों-बछड़ों का कत्ल किया गया है। आखिर ऐसे हालात पैदा कैसे हुए?

इनका सीधा सम्बंध आधुनिक ढंग के औद्योगिक पशुपालन से है, जिसमें बड़े-बड़े फार्मों में छोटे-छोटे दड़बों या पिंजरों में हज़ारों-

लाखों पशु-पक्षियों को एक जगह पाला जाता है। उनको घूमने-फिरने की कोई जगह नहीं होती है। अक्सर काफी गंदगी होती है। काफी रसायनयुक्त आहार खिलाकर, दवाइयां एवं हारमोन देकर, कम से कम समय में उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाने की कोशिश होती है। इन्हें फार्म की बजाय फैक्टरी कहना ज्यादा सही होगा।

पालतू मुर्गियों व बतखों में बर्ड फ्लू की बीमारी काफी समय से चली आ रही है किंतु नए हालात में इसका रोगाणु एच5एन1 नामक नए घातक रूप में बदल गया है, जो प्रजाति की बाधा लांघकर इंसानों को प्रभावित करने में सक्षम है। विश्व खाद्य संगठन ने इसकी उत्पत्ति को चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया में मुर्गी पालन के तेज़ी से विस्तार और औद्योगीकरण से जोड़ा है। पिछले पंद्रह वर्षों में चीन में मुर्गी उत्पादन दुगना हो गया है। थाईलैण्ड, वियतनाम और इण्डोनेशिया में मुर्गी उत्पादन अस्सी के दशक की तुलना में तीन गुना हो गया है। संभव है कि बर्ड फ्लू का यह नया रोगाणु इंसान से इंसान को संक्रमित करने लगेगा। तब यह एक महामारी का रूप धारण कर सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इससे निपटने की व्यापक तैयारी की ज़रूरत बताई है।

मैड काऊ रोग का किस्सा तो और भयानक है। गायों की इस बीमारी (बीएसई) में मस्तिष्क को काफी क्षति पहुंचती है, इसलिए इसे पागल गाय रोग कहा गया है। यह इसलिए फैल रहा है क्योंकि गायों को उन्हीं की हड्डियों, खून और अन्य अवशेषों का बना हुआ आहार खिलाया जा रहा है। आधुनिक बूचड़खानों में गायों आदि को काटने के बाद मांस को तो पैक करके बेच दिया जाता है, किन्तु बड़े पैमाने पर हड्डियां, अंतड़ियां, खून आदि का कचरा निकलता है, जिसको ठिकाने लगाना एक समस्या होता है। इस समस्या से निपटने का एक तरीका यह निकाला गया कि इस कचरे का चूरा करके पुनः गायों के आहार में मिला दिया जाए। रोग के व्यापक प्रकोप के बाद ब्रिटेन ने इस पर पाबंदी लगाई है। मगर उत्तरी अमरीका सहित कुछ स्थानों पर यह प्रथा चालू है।

इस तरह के रोग से ग्रस्त गाय का मांस खाने वाले इंसानों को भी यह रोग हो सकता है। इसी तरह भोजन से फैलने वाले कुछ अन्य संक्रामक रोगों का सम्बंध भी आधुनिक फैक्टरीनुमा पशुपालन से जोड़ा जा रहा है।

मांसाहार शुरू से मनुष्य के भोजन का हिस्सा रहा है और भोजन के लिए पशुपालन हज़ारों सालों से चला आ रहा है। किंतु आधुनिक औद्योगिक पशुपालन एक बिल्कुल ही अलग चीज़ है, जो काफी अप्राकृतिक, बरबादीपूर्ण, प्रदूषणकारी और पूंजी प्रधान है। इसने लालच व क्रूरता की सारी मर्यादाएं तोड़ दी हैं। इसमें पशुओं को खुले चारागाहों

मेक्सिको सिटी के पास ला गोरिया नामक जिस कस्बे से मार्च महीने में स्वाइन फ्लू का यह प्रकोप शुरु हुआ है, वहां स्मिथफील्ड फूड्स कंपनी का काफी बड़ा सुअर फार्म है। यह सुअर-मांस का व्यापार करने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी है। ला गोरिया में यह प्रति वर्ष लगभग दस लाख सुअर पालती है। 2006 में इसने 2.6 करोड़ सुअरों का मांस बेचा था, इसकी कुल बिक्री 1140 करोड़ डॉलर की हुई और इसे 42.1 करोड़ डॉलर का मुनाफा हुआ। इस कंपनी पर पर्यावरण को दूषित करने के 5000 से ज़्यादा प्रकरण दर्ज हैं। एक दशक पहले इस पर वर्जीनिया प्रांत की एक नदी को प्रदूषित करने के लिए 12.60 करोड़ डॉलर का जुर्माना लगाया गया था। यूएस के रोग नियंत्रण केन्द्र की जांच के नतीजों से पता चला है कि इस स्वाइन फ्लू का वायरस 90 के दशक के अंत में उत्तरी कैरोलीना प्रांत की औद्योगिक सुअर इकाइयों में पाई गई वायरस प्रजाति से निकला है। यह अमरीका का सबसे बड़ा और सबसे घना सुअर पालन वाला प्रांत है।

या खेतों में नहीं चराया जाता और न ही उन्हें कुदरती भोजन दिया जाता है। ये परिवर्तन खास तौर से पिछली शताब्दी के उत्तरार्ध में हुए हैं। इस अवधि में दुनिया में मांस का उत्पादन और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तेज़ी से बढ़ा है।

फैक्टरीनुमा पशुपालन सबसे पहले मुर्गियों का शुरू हुआ, उसके बाद सुअरों का नंबर आया। मिडकिफ नामक एक अमरीकी लेखक ने कंपनियों के आधुनिक मांस कारखानों पर अपनी किताब में इन्हें 'पीड़ा और गंदगी का निरंतर फैलता हुआ दायरा' कहा है। एम.जे. वाट्स ने इनकी तुलना 'उच्च तकनीकी यातना गृहों' से की है। टोनी वैस ने अपनी ताज़ा पुस्तक में सुअर फार्मों का वर्णन इस प्रकार किया है - "इन फैक्टरी फार्मों में मादा सुअर अपना पूरा जीवन धातु या कांक्रीट के फर्श पर बने छोटे-छोटे खांचों में बच्चे जनते और पालते बिता देती है। ये खांचे इतने छोटे होते हैं कि वे मुड़ भी नहीं पातीं। शिशुओं को तीन-चार सप्ताह में मां से अलग कर मादा सुअरों को फिर से गर्भ धारण कराया जाता है। शिशुओं को अलग कोठरियों में रखकर एन्टी-बायोटिक दवाइयों और हारमोन युक्त जीन-परिवर्तित आहार दिया जाता है ताकि उनका वज़न तेज़ी से बढ़े। इस कैद के कारण होने वाले रोगों एवं अस्वाभाविक व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए काफी दवाइयां दी जाती हैं। उनकी पूंछ काट दी जाती है और इससे होने वाले गंदगी व दूषित कचरे को नदियों या समुद्री खाड़ियों में बहा दिया जाता है।" ए. कॉकबर्न ने दुनिया के मांस के इतिहास पर अपने एक पर्चे में संयुक्त राज्य अमरीका के एक प्रमुख सुअर-मांस उत्पादक राज्य उत्तरी कैरोलीना के बारे में भी ऐसे ही हालात बयान किए हैं।

बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, और मैड काऊ रोग दरअसल एक बड़ी और गहरी बीमारी के ऊपरी लक्षण हैं। वह बीमारी है भोग, लालच व गैर बराबरी पर आधारित पूंजीवादी सभ्यता की, जिसमें शीर्ष पर बैठे थोड़े से लोगों ने अपने मुनाफे एवं विलास के लिए बाकी लोगों, प्राणियों तथा प्रकृति पर अत्याचार करने को अपना कारोबार बना लिया है। आप यह भी कह सकते है कि ये नयी महामारियां उन निरीह प्राणियों या प्रकृति के प्रतिशोध के तरीके हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत जुलाई 2009
अंक 246

सीवर मज़दूरों के जीवन व स्वास्थ्य की रक्षा कैसे हो?

- **दिमाग इस्तेमाल करें, चुस्त-दुरुस्त रखें**
- **विज्ञान शिक्षा के मायने**

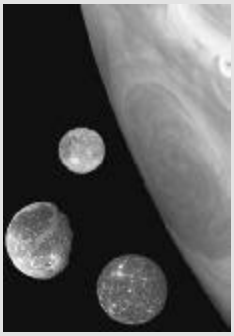

- **बृहस्पति अपने कई चंद्रमा निगल चुका है**
- **अंतरिक्ष यात्रा की भीड़भरी तनहाइयां**